मार्कफिल्ड हायब्रीड सीड्स प्रायव्हेट लिमिटेड
बी-३, अतिरिक्त औद्योगिक वसाहत, जालना, कस्टमर केअर मोबाईल नंबर ९४०५७८२६६८

मेथी

हायब्रिड्स/वाण: - पूसा अर्ली बंचिंग

हवामान (Weather) : हे थंड हंगामातील पीक आहे. ज्या भागात मुसळधार आणि सतत पाऊस पडतो, तिथे मेथीची लागवड टाळावी.

जमीन (Soil) : मेथी लागवडीसाठी चांगल्या निचऱ्याची आणि सुपीक चिकणमाती माती सर्वात योग्य असते. अनुकूल मातीचा सामू ६-७ आहे.

जमीन तयार करणे: जमीन पूर्णपणे नांगरून तण आणि ढिगाऱ्यांपासून मुक्त करा. जमीन तयार करताना १० टन/एकर चांगले कुजलेले शेण घाला आणि मातीत चांगले मिसळा. गाजराच्या लागवडीसाठी जमिन खोल उभी-आडवी नांगरुन घ्यावी व सपाट करुन घ्यावी.

पेरणीची वेळ: जून-जुलै आणि ऑक्टोबरचा शेवटचा आठवडा आणि नोव्हेंबरचा पहिला आठवडा पेरणीसाठी सर्वोत्तम वेळ आहे.
अंतर: ओळीपासून ओळीपर्यंत २२.५ सेमी अंतर वापरले जाते.
पेरणीची खोली: ३-४ सेमी खोलीवर वाफ्यावर बियाणे पेरावे.
पेरणीची पद्धत: पेरणीसाठी प्रसार पद्धत वापरली जाते.
बियाण्याचा दर: एक एकर जमिनीसाठी १२ किलो/एकर बियाणे वापरावे.
पीक फेरपालट: मेथीची फेरपालट खरीप पिकांसोबत जसे की भात, मका, मूग, चारा पिके इत्यादींसह करता येते.

बियाणे प्रक्रिया: पेरणीपूर्वी बियाणे ८-१२ तास पाण्यात भिजवा. जमिनीतील कीटक आणि रोगांपासून बियाण्यांचे संरक्षण करण्यासाठी, त्यांना थायरम @४ ग्रॅम/किलो बियाणे किंवा कार्बेन्डाझिम ५०%WP @३ ग्रॅम/किलो बियाणे या प्रमाणात प्रक्रिया करा. रासायनिक प्रक्रिया केल्यानंतर, १२ किलो बियाण्यांसाठी अॅझोस्पिरिलम @३०० ग्रॅम/एकर + ट्रायकोडर्मा व्हायराइड @२० ग्रॅम/एकर बियाणे या प्रमाणात प्रक्रिया करा.

खत: पेरणीच्या वेळी प्रति एकर ५ किलो नायट्रोजन (१२ किलो युरिया), ८ किलो प्लस २ओ५ (५० किलो सुपरफॉस्फेट) घाला.

उगवण झाल्यानंतर १५-२० दिवसांनी जलद वाढीसाठी ट्रायकोन्टानॉल हार्मोन @२० मिली/१० लिटर फवारणी करा. तसेच पेरणीच्या २० दिवसांनी NPK (१९:१९:१९) खताची ७५ ग्रॅम/१५ लिटर पाण्यात एक फवारणी केल्यास पिकाची चांगली आणि जलद वाढ होते. अधिक उत्पादन मिळविण्यासाठी, पेरणीनंतर ४०-५० दिवसांनी ब्रासिनोलाइड ५० मिली/एकर/१५० लिटर पाण्यात फवारणी करा. १० दिवसांनी दुसरी फवारणी करा. झाडाला दंवाच्या दुखापतीपासून वाचवण्यासाठी पेरणीनंतर ४५ आणि ६५ दिवसांनी थायोरिया १५० ग्रॅम/एकर/१५० लिटर पाण्यात दोन फवारण्या करा.

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

सिंचन: बियाण्याची जलद उगवण होण्यासाठी, पेरणीपूर्वी पाणी द्या. मेथी पिकाच्या चांगल्या उत्पादनासाठी साधारणपणे पेरणीनंतर ३० व्या दिवशी, ७५ व्या दिवशी, ८५ व्या आणि १०५ व्या दिवशी तीन ते चार पाणी देणे आवश्यक आहे. शेंगा वाढण्याच्या आणि बियाणे वाढीच्या टप्प्यावर पाण्याचा ताण पडतो त्यामुळे या टप्प्यावर पाण्याचा ताण टाळा.

तण नियंत्रण: शेत तणमुक्त ठेवण्यासाठी एक किंवा दोन कोळपणी करा. पेरणीनंतर २५-३० दिवसांनी पहिली खुरपणी आणि पहिली खुरपणी ३० दिवसांनी दुसरी खुरपणी करा. रासायनिक पद्धतीने तण नियंत्रणासाठी, रोपापूर्वी फ्लुक्लोरालिन @८०० मिली/एकर वापरण्याची शिफारस केली जाते किंवा तण नियंत्रणासाठी पेंडीमेथालिन @१.३ लिटर/एकर २०० लिटर पाण्यात मिसळून पेरणीनंतर १-२ दिवसांच्या आत जमिनीतील योग्य ओलावा असताना फवारणी करावी.

जेव्हा झाड सुमारे ४ इंच उंचीचे असेल तेव्हा पिंचिंग ऑपरेशन करा, ते फांद्या वाढण्यास प्रोत्साहन देईल.

काढणी: भाजीपाला पिकासाठी, पेरणीनंतर २०-२५ दिवसांनी पिकाची कापणी सुरू करता येते तर धान्यासाठी, पेरणीनंतर ९०-१०० दिवसांनी कापणी केली जाते. धान्यासाठी, जेव्हा खालची पाने पिवळी पडतात आणि गळू लागतात आणि शेंगा पिवळसर रंगाच्या होतात तेव्हा कापणी करा. काढणीसाठी विळा वापरा. कापणीनंतर, पिकांना बांधात बांधा आणि ६-७ दिवस सूर्यप्रकाशात वाळवू द्या. योग्यरित्या वाळवल्यानंतर, मळणी करा आणि नंतर साफसफाई आणि प्रतवारी करा.

टीप:- वरील सर्व माहिती आमच्या संशोधन केंद्रात केलेल्या प्रयोगावर आधारित आहे. वरील माहिती वेगवेगळ्या ठिकाणी वेगवेगळ्या हवामान, मातीचा प्रकार आणि ऋतूंमुळे बदलू शकते.

मार्कफील्ड हाइब्रिड सीड्स प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, एडिशनल इंडस्ट्रियल कॉलोनी, जालना, कस्टमर केयर मोबाइल नंबर 9405782668

मेथी

हाइब्रिड/किस्में: - पूसा अर्ली बंचिंग

मिट्टी: इसे सभी प्रकार की मिट्टी जिनमें कार्बनिक पदार्थ उच्च मात्रा में हो, उगाया जा सकता है पर यह अच्छे निकास वाली बालुई और रेतली बालुई मिट्टी में अच्छे परिणाम देती है। यह मिट्टी की 5.3 से 8.2 पी एच को सहन कर सकती है।

भूमि की तैयारी: मिट्टी के भुरभुरा होने तक खेत की दो - तीन बार जोताई करें उसके बाद सुहागे की सहायता से ज़मीन को समतल करें। आखिरी जोताई के समय 10-15 टन प्रति एकड़ अच्छी तरह से गली हुई रूड़ी की खाद डालें। बिजाई के लिए 3x2 मीटर समतल बीज बैड तैयार करें।

बिजाई का समय: जून - जुलै और अक्तूबर का आखिरी सप्ताह और नवंबर का पहला सप्ताह अच्छा समय है।

फासला: पंक्ति से पंक्ति का फासला 22.5 सैं.मी का प्रयोग करें।

बीज की गहराई: बैड पर 3-4 सैं.मी. की गहराई पर बीज बोयें।

बिजाई का ढंग: इसकी बिजाई हाथ से छींटे द्वारा की जाती है।
बी
ज की मात्रा: एक एकड़ खेत में बिजाई के लिए 12 किलोग्राम प्रति एकड़ बीजों का प्रयोग करें।

फसली चक्र: मेथी के साथ खरीफ फसलें जैसे धान, मक्की, हरी मूंग और हरे चारे वाली फसलें उगाई जा सकती हैं।

बीज का उपचार: बिजाई से पहले बीजों को 8 से 12 घंटे के लिए पानी में भिगो दें। बीजों को मिट्टी से पैदा होने वाले कीट और बीमारियों से बचाने के लिए थीरम 4 ग्राम और कार्बेनडाज़िम 50 प्रतिशत डब्लयु पी 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से उपचार करें। रासायनिक उपचार के बाद एज़ोसपीरीलियम 600 ग्राम + ट्राइकोडरमा विराइड 20 ग्राम प्रति एकड़ से प्रति 12 किलो बीजों का उपचार करें।

उर्वरक: बिजाई के समय 5 किलो नाइट्रोजन (12 किलो यूरिया), 8 किलो पोटाश्यिम (50 किलो सुपर फासफेट) प्रति एकड़ में डालें। अच्छी वृद्धि के लिए अंकुरन के 15-20 दिनों के बाद ट्राइकोंटानोल हारमोन 20 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। बिजाई के 20 दिनों के बाद NPK(19:19:19) 75 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी की स्प्रे भी अच्छी और तेजी से वृद्धि करने में सहायता करती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए ब्रासीनोलाइड 50 मि.ली. प्रति एकड़ 150 लीटर पानी में मिलाकर बिजाई के 40-50 दिनों के बाद स्प्रे करें। इसकी दूसरी स्प्रे 10 दिनों के बाद करें। कोहरे से होने वाले हमले से बचाने के लिए थाइयूरिया 150 ग्राम प्रति एकड़ की 150 लीटर पानी में मिलाकर बिजाई के 45 और 65 दिनों के बाद स्प्रे करें।

खेत को नदीन मुक्त करने के लिए एक या दो बार गोडाई करें। पहली गोडाई बिजाई के 25-30 दिनों के बाद और दूसरी गोडाई पहली गोडाई के 30 दिनों के बाद करें। नदीनों को रासायनिक तरीके से रोकने के लिए फलूक्लोरालिन 300 ग्राम प्रति एकड़ में डालने की सिफारिश की जाती है इसके इलावा पैंडीमैथालिन 1.3 लीटर प्रति एकड़ को 200 लीटर पानी में मिलाकर बिजाई के 1-2 दिनों के अंदर अंदर मिट्टी में नमी बने रहने पर स्प्रे करें।

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Nematodes	Neem Cake	0.5 ton per acre at time of sowing
2	Leaf spot	Dithane M 45	2.5 gram per litre

सिंचाई: बीजों के जल्दी अंकुरन के लिए बिजाई से पहले सिंचाई करें। मेथी की उचित पैदावार के लिए बिजाई के 30, 75, 85, 105 दिनों के बाद तीन से चार सिंचाई करें। फली के विकास और बीज के विकास के समय पानी की कमी नहीं होने देनी चाहिए क्योंकि इससे पैदावार में भारी नुकसान होता है।

खरपतवार नियंत्रण: नदीनों की रोकथाम के लिए घास को हाथ से उखाड़कर बाहर निकालें और फसल और मिट्टी को हवादार बनाए रखें।
कटाई: सब्जी के तौर पर उपयोग के लिए इस फसल की कटाई बिजाई के 20-25 दिनों के बाद करें। बीज प्राप्त करने के लिए इसकी कटाई बिजाई के 90-100 दिनों के बाद करें। दानों के लिए इसकी कटाई निचले पत्तों के पीले होने और झड़ने पर और फलियों के पीले रंग के होने पर करें। कटाई के लिए दरांती का प्रयोग करें। कटाई के बाद फसल की गठरी बनाकर बांध लें और 6-7 दिन सूरज की रोशनी में रखें। अच्छी तरह से सूखने पर इसकी छंटाई करें, फिर सफाई करके ग्रेडिंग करें।

नोट:- उपरोक्त सभी जानकारी हमारे शोध केंद्र में किए गए प्रयोग पर आधारित है। उपरोक्त जानकारी अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग जलवायु, मिट्टी के प्रकार और मौसम के कारण अलग-अलग हो सकती है।

Markfield Hybrid Seeds Pvt. Ltd.
B-3, Additional Industrial Colony, Jalna, Customer Care Mobile No. 9405782668

Fenugreek

Hybrids/Varieties: - Pusa Early Bunching

Soil: It can be grown in all type of soil rich in organic content but give best result when grown in well drained loamy or sandy loam soils. It can tolerate pH of range 5.3 to 8.2.

Land preparation: Plough the land for two - three times and bring soil to fine tilth. After then carry out planking operation to make land levelled and uniform. Add 10-15ton/acre of well decomposed cow dung at time of last ploughing. For sowing prepared flat beds of 3x2m.

Time of sowing: June-July and Last week of October and first week of November is best time for sowing.
Spacing: Line to line distance of 22.5 cm is used.
Sowing Depth: Sow seeds on bed at depth of 3-4 cm.
Method of sowing: For sowing broadcasting method is used.
Seed Rate: For sowing one acre land, seed rate of 12 kg/acre is used.
Crop Rotation: Fenugreek can be rotated with Kharif crops like Paddy, maize, green gram, fodder crops etc.

Seed treatment: Before sowing,soaked seeds in water for 8-12 hr. To protect seeds from soil born pest and diseases, treat them with Thiram@4 gm/kg of seed or Carbendazim 50%WP@3 gm/kg of seed. After chemical treatment, treat seeds with Azospirillum@300 gm/acre + Trichoderma Viride@20 gm/acre for 12 kg of seeds.

Fertilizer: At time of sowing add, 5 kg of Nitrogen (12 kg of Urea), 8 kg of P_2O_5 (50 kg of Superphosphate) per acre.
To attain fast growth 15-20 days after germination take spray of Triacontanol hormone@20ml/10 Ltr. Also one spray of NPK(19:19:19) fertilizer@75 gm/15 Ltr of water at 20 days of sowing helps in good and faster growth of crop. To obtained more yield, spray Brassinolide@50 ml/acre/150 Ltr water, 40-50 days after sowing. Take its second spray after 10 days. To protect plant from frost injury gives two sprays of Thiourea @150 gm/acre/150 Ltr of water at 45 & 65 days after sowing

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

Irrigation: For quick germination of seed, give pre-sowing irrigation. Generally three to four irrigations on 30th day, 75th day, 85th and 105th day after sowing are required for optimum yield of fenugreek crop. Water stress at pod development and seed development stage leads to heavy loss in yield so avoid water stress at this stage.

Weed Control: Give one or two hoeings operations to keep field weed free. Take first weeding 25-30days after sowing and second 30days after first weeding. To control weeds chemically, pre-plant application of Fluchloralin@800 ml/acre is recommended or for weed control spray with Pendimethaline@1.3 ltr/acre, by mixing in 200 ltr water within1-2 days of sowing at proper soil moisture.
When plant is about 4 inch height, do pinching operation, it will encourages branching.

Harvesting: For vegetable purpose, harvesting of crop can be started from 20-25days after sowing whereas for grain purpose, harvesting is done 90-100days after sowing. For grain purpose, harvest when lower leaves turn yellow and starts shedding and pods turn to yellowish color. Use sickle for harvesting purpose. After harvesting, tie crops in bundle and allowed to dry in sunlight for 6-7days. After proper drying, carry out threshing after then cleaning and grading operation.

Note:- All the above information is based on the experiment conducted at our research center. The above information may vary due to different climate, soil type and seasons at different places.

માર્કફિલ્ડ હાઇબ્રિડ સીડ્સ પ્રા. લિ.
બી-૩, વધારાની ઔદ્યોગિક વસાહત, જાલના, કસ્ટમર કેર મોબાઇલ નંબર ૯૪૦૫૭૮૨૬૬૮

મેથી

સંકર/જાતો: - પુસા અર્લી બંચિંગ

માટી: તે કાર્બનિક પદાર્થોથી ભરપૂર તમામ પ્રકારની જમીનમાં ઉગાડી શકાય છે પરંતુ સારી રીતે નિતારાયેલી લોમી અથવા રેતાળ લોમ જમીનમાં ઉગાડવામાં આવે ત્યારે શ્રેષ્ઠ પરિણામ આપે છે. તે ૫.૩ થી ૮.૨ ની રેન્જમાં pH સહન કરી શકે છે.

જમીનની તૈયારી: જમીનને બે-ત્રણ વખત ખેડવી અને માટીને સારી રીતે ખેડવી. ત્યારબાદ જમીનને સમતળ અને એકસમાન બનાવવા માટે પ્લેન્કિંગ કામગીરી કરો. છેલ્લી ખેડાણ સમયે ૧૦-૧૫ ટન/એકર સારી રીતે વિઘટિત ગાયનું છાણ ઉમેરો. વાવણી માટે ૩x૨ મીટરના સપાટ પથારી તૈયાર કરો.

વાવણીનો સમય: જૂન-જુલાઈ અને ઓક્ટોબરનો છેલ્લો અઠવાડિયું અને નવેમ્બરનો પહેલો અઠવાડિયું વાવણી માટે શ્રેષ્ઠ સમય છે.

અંતર: લાઇનથી લાઇનનું અંતર ૨૨.૫ સે.મી. વપરાય છે.

વાવણીની ઊંડાઈ: પથારીમાં ૩-૪ સે.મી. ઊંડાઈએ બીજ વાવો.
વાવણીની પદ્ધતિ: વાવણી માટે છંટકાવ પદ્ધતિનો ઉપયોગ થાય છે.
બીજ દર: એક એકર જમીનમાં વાવણી માટે, ૧૨ કિલો/એકર બીજ દરનો ઉપયોગ થાય છે.

પાક પરિભ્રમણ: મેથીનો ઉપયોગ ખરીફ પાક જેમ કે ડાંગર, મકાઈ, લીલા ચણા, ઘાસચારાના પાક વગેરે સાથે કરી શકાય છે.

બીજ માવજત: વાવણી પહેલાં, બીજને ૮-૧૨ કલાક પાણીમાં પલાળી રાખો. જમીનમાં ઉત્પન્ન થતા જીવાત અને રોગોથી બીજને બચાવવા માટે, તેમને થિરામ @૪ ગ્રામ/કિલો બીજ અથવા કાર્બેન્ડાઝીમ ૫૦%WP @૩ ગ્રામ/કિલો બીજ સાથે માવજત કરો. રાસાયણિક માવજત પછી, ૧૨ કિલો બીજ માટે એઝોસ્પીરીલમ @૩૦૦ ગ્રામ/એકર + ટ્રાઇકોડર્મા વિરાઇડ @૨૦ ગ્રામ/એકર સાથે માવજત કરો.

ખાતર: વાવણી સમયે, પ્રતિ એકર ૫ કિલો નાઇટ્રોજન (૧૨ કિલો યુરિયા), ૮ કિલો P2O5 (૫૦ કિલો સુપરફોસ્ફેટ) ઉમેરો.
અંકુરણ પછી ૧૫-૨૦ દિવસ પછી ઝડપી વિકાસ મેળવવા માટે ટ્રાયકોન્ટેનોલ હોર્મોન @૨૦ મિલી/૧૦ લિટરનો છંટકાવ કરો. તેમજ વાવણીના ૨૦ દિવસે NPK (૧૯:૧૯:૧૯) ખાતર @૭૫ ગ્રામ/૧૫ લિટર પાણીમાં ભેળવીને પાકનો સારો અને ઝડપી વિકાસ કરવામાં મદદ કરે છે. વધુ ઉપજ મેળવવા માટે, વાવણીના ૪૦-૫૦ દિવસ પછી બ્રાસિનોલાઇડ @૫૦ મિલી/એકર/૧૫૦ લિટર પાણીમાં છંટકાવ કરો. ૧૦ દિવસ પછી તેનો બીજો છંટકાવ કરો. છોડને હિમથી બચાવવા માટે વાવણીના ૪૫ અને ૬૫ દિવસ પછી થિયોરિયા @૧૫૦ ગ્રામ/એકર/૧૫૦ લિટર પાણીમાં બે છંટકાવ કરો.

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

સિંચાઈ: બીજના ઝડપી અંકુરણ માટે, વાવણી પહેલાં સિંચાઇ આપો. મેથીના પાકના શ્રેષ્ઠ ઉત્પાદન માટે વાવણી પછી 30મા દિવસે, 75મા દિવસે, 85મા અને 105મા દિવસે સામાન્ય રીતે ત્રણ થી ચાર પિયત આપવાની જરૂર પડે છે. શીંગના વિકાસ અને બીજ વિકાસના તબક્કે પાણીનો તણાવ ઉપજમાં ભારે નુકસાન પહોંચાડે છે તેથી આ તબક્કે પાણીનો તણાવ ટાળો.

નીંદણ નિયંત્રણ: ખેતરને નીંદણ મુક્ત રાખવા માટે એક કે બે કોતરણી કરો. વાવણી પછી 25-30 દિવસ પછી પ્રથમ નિંદામણ અને પ્રથમ નિંદામણ પછી 30 દિવસ પછી બીજું નિંદામણ કરો. રાસાયણિક રીતે નીંદણ નિયંત્રણ માટે, છોડ પહેલાં ફ્લુક્લોરાલિન @ 800 મિલી/એકરનો ઉપયોગ કરવાની ભલામણ કરવામાં આવે છે અથવા નીંદણ નિયંત્રણ માટે પેન્ડીમેથાલિન @ 1.3 લિટર/એકરનો ઉપયોગ વાવણીના 1-2 દિવસની અંદર 200 લિટર પાણીમાં ભેળવીને યોગ્ય જમીન ભેજ પર છંટકાવ કરવાની ભલામણ કરવામાં આવે છે.

જ્યારે છોડ લગભગ 4 ઇંચ ઉંચો હોય, ત્યારે પિંચિંગ ઓપરેશન કરો, તે ડાળીઓને પ્રોત્સાહન આપશે.

લણણી: શાકભાજી માટે, પાકની લણણી વાવણી પછી 20-25 દિવસથી શરૂ કરી શકાય છે જ્યારે અનાજ માટે, લણણી વાવણી પછી 90-100 દિવસ પછી કરવામાં આવે છે. અનાજ માટે, જ્યારે નીચલા પાંદડા પીળા થઈ જાય અને ખરી પડે અને શીંગો પીળા રંગની થઈ જાય ત્યારે કાપણી કરો. લણણી માટે દાતરડાનો ઉપયોગ કરો. લણણી પછી, પાકને પોટલામાં બાંધો અને 6-7 દિવસ સુધી સૂર્યપ્રકાશમાં સૂકવવા દો. યોગ્ય રીતે સૂકાયા પછી, થ્રેશિંગ કરો અને પછી સફાઇ અને ગ્રેડિંગ કામગીરી કરો.

નોંધ:- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગ પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી વિવિધ સ્થળોએ વિવિધ આબોહવા, માટીના પ્રકાર અને ઋતુઓને કારણે બદલાઇ શકે છે.

మార్క్‌ఫీల్డ్ హైబ్రిడ్ సీడ్స్ ప్రైవేట్ లిమిటెడ్
B-3, అదనపు ఇండస్ట్రియల్ కాలనీ, జల్నా, కస్టమర్ కేర్ మొబైల్ నం. 9405782668

మెంతులు

సంకరజాతులు/రకాలు: - పూసా ఎర్లీ బంచింగ్

నేల: ధీనిని సేంద్రీయ పదార్థం అధికంగా ఉన్న అన్ని రకాల నేలల్లో పెంచవచ్చు కానీ బాగా నీరు కారిన లోమీ లేదా ఇసుక లోమీ నేలల్లో పెంచినప్పుడు ఉత్తమ ఫలితాన్ని ఇస్తుంది. ఇది 5.3 నుండి 8.2 వరకు pHని తట్టుకోగలదు.

భూమి తయారీ: భూమిని రెండు - మూడు సార్లు దున్నండి మరియు మట్టిని చక్కగా వడకట్టండి. ఆ తర్వాత భూమిని చదునుగా మరియు ఏకరీతిగా చేయడానికి ప్లాంకింగ్ ఆపరేషన్ చేయండి. చివరి దున్నేటప్పుడు 10-15 టన్నులు/ఎకరానికి బాగా కుళ్ళిన ఆవు పేడను జోడించండి. విత్తడానికి 3x2 మీటర్ల ఫ్లాట్ బెడ్‌లను సిద్ధం చేయండి.

విత్తే సమయం: జూన్-జూలై మరియు అక్టోబర్ చివరి వారం మరియు నవంబర్ మొదటి వారం విత్తడానికి ఉత్తమ సమయం.

అంతరం: లైన్ నుండి లైన్ దూరం 22.5 సెం.మీ. ఉపయోగించబడుతుంది.

విత్తే లోతు: 3-4 సెం.మీ. లోతులో బెడ్ మీద విత్తనాలు విత్తండి.
విత్తే విధానం: విత్తే ప్రసార పద్ధతిని ఉపయోగిస్తారు.
విత్తన రేటు: ఒక ఎకరం భూమిలో విత్తడానికి, ఎకరానికి 12 కిలోల విత్తన రేటును ఉపయోగిస్తారు.

పంట మార్పిడి: వరి, మొక్కజొన్న, పెసలు, పశుగ్రాసం పంటలు వంటి ఖరీఫ్ పంటలతో మెంతులు మార్పిడి చేయవచ్చు.

విత్తన చికిత్స: విత్తే ముందు, విత్తనాలను 8-12 గంటలు నీటిలో నానబెట్టండి. నేల ద్వారా సంక్రమించే తెగుళ్లు మరియు వ్యాధుల నుండి విత్తనాలను రక్షించడానికి, వాటిని 4 గ్రాముల/కిలో విత్తనానికి థిరామ్ లేదా 50% WP@3 గ్రాముల/కిలో విత్తనానికి కార్బెండజిమ్ తో చికిత్స చేయండి. రసాయన చికిత్స తర్వాత, 12 కిలోల విత్తనాలకు 300 గ్రాముల/ఎకరానికి అజోస్పిరిల్లమ్ + 20 గ్రాముల/ఎకరానికి ట్రైకోడెర్మా విరైడ్ తో చికిత్స చేయండి.

ఎరువు: విత్తే సమయంలో, ఎకరానికి 5 కిలోల నత్రజని (12 కిలోల యూరియా), 8 కిలోల P2O5 (50 కిలోల సూపర్ ఫాస్ఫేట్) జోడించండి.
అంకురోత్పత్తి తర్వాత 15-20 రోజులలో వేగంగా పెరుగుదల సాధించడానికి ట్రయాకాంటనాల్ హార్మోన్ @ 20ml/10 Ltr పిచికారీ చేయాలి. అలాగే విత్తిన 20 రోజులలో NPK (19:19:19) ఎరువులు @ 75 గ్రాములు/15 లీటర్ల నీటిలో కలిపి పిచికారీ చేయడం వల్ల పంట మంచి మరియు వేగవంతమైన పెరుగుదలకు సహాయపడుతుంది. ఎక్కువ దిగుబడి పొందడానికి, విత్తిన 40-50 రోజుల తర్వాత బ్రాసినోలైడ్ @ 50 మి.లీ/ఎకరం/150 లీటర్ల నీటిలో, పిచికారీ చేయాలి. 10 రోజుల తర్వాత రెండవ స్ప్రే తీసుకోవాలి. మంచు గాయం నుండి మొక్కను రక్షించడానికి విత్తిన 45 & 65 రోజుల తర్వాత ఎకరం/150 లీటర్ల నీటిలో థియోరియా @ 150 గ్రాములు చొప్పున రెండు స్ప్రేలు ఇవ్వబడతాయి.

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

నీటిపారుదల: విత్తనం త్వరగా అంకురోత్పత్తి కోసం, విత్తడానికి ముందు నీటిపారుదల ఇవ్వండి. సాధారణంగా మెంతి పంట యొక్క ఉత్తమ దిగుబడి కోసం విత్తిన 30వ రోజు, 75వ రోజు, 85వ రోజు మరియు 105వ రోజు మూడు నుండి నాలుగు సార్లు నీరు పెట్టడం అవసరం. కాయ అభివృద్ధి మరియు విత్తన అభివృద్ధి దశలో నీటి ఒత్తిడి దిగుబడిలో భారీ నష్టానికి దారితీస్తుంది కాబట్టి ఈ దశలో నీటి ఒత్తిడిని నివారించండి.

కలుపు నియంత్రణ: పొలంలో కలుపు లేకుండా ఉండటానికి ఒకటి లేదా రెండు గొయ్యి ఆపరేషన్లు చేయండి. విత్తిన 25-30 రోజుల తర్వాత మొదటి కలుపు తీయుట మరియు మొదటి కలుపు తీసిన తర్వాత రెండవ 30 రోజుల తర్వాత రెండవసారి కలుపు తీయుట చేయండి. రసాయనికంగా కలుపు మొక్కలను నియంత్రించడానికి, మొక్కల పెంపునకు ముందు ఫ్లూక్లోరాలిన్ @ 800 ml/ఎకరానికి వాడటం లేదా కలుపు నియంత్రణ కోసం, విత్తిన 1-2 రోజులలోపు 200 లీటర్ల నీటిలో సరైన నేల తేమతో కలిపి, ఎకరానికి 1.3 లీటర్ల పెండిమెథాలిన్ తో పిచికారీ చేయడం సిఫార్సు చేయబడింది.

మొక్క 4 అంగుళాల ఎత్తు ఉన్నప్పుడు, చిటికెడు ఆపరేషన్ చేయండి, ఇది కొమ్మలను ప్రోత్సహిస్తుంది.

పంట కోత: కూరగాయల ప్రయోజనం కోసం, విత్తిన 20-25 రోజుల తర్వాత పంట కోత ప్రారంభించవచ్చు, అయితే ధాన్యం ప్రయోజనం కోసం, విత్తిన 90-100 రోజుల తర్వాత కోత ప్రారంభమవుతుంది. ధాన్యం ప్రయోజనం కోసం, దిగువ ఆకులు పసుపు రంగులోకి మారి రాలిపోవడం ప్రారంభించి, కాయలు పసుపు రంగులోకి మారినప్పుడు కోయండి. కోత ప్రయోజనం కోసం కొడవలిని ఉపయోగించండి. పంట కోసిన తర్వాత, పంటలను కట్టలుగా కట్టి, 6-7 రోజులు సూర్యకాంతిలో ఆరనివ్వండి. సరిగ్గా ఎండబెట్టిన తర్వాత, నూర్పిడి చేసి, ఆపై శుభ్రపరచడం మరియు గ్రేడింగ్ ఆపరేషన్ చేయండి.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగం ఆధారంగా ఉంటుంది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వివిధ ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు రుతువుల కారణంగా మారవచ్చు.

ಮಾರ್ಕ್‌ಫೀಲ್ಡ್ ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಸೀಡ್ಸ್ ಪ್ರೈ. ಲಿಮಿಟೆಡ್.
ಬಿ-3, ಹೆಚ್ಚುವರಿ ಕೈಗಾರಿಕಾ ಕಾಲೋನಿ, ಜಲ್ನಾ, ಕಸ್ಟಮರ್ ಕೇರ್ ಮೊಬೈಲ್ ಸಂಖ್ಯೆ. 9405782668

ಮೆಂತ್ಯ

ಹೈಬ್ರಿಡ್‌ಗಳು/ವೈವಿಧ್ಯಗಳು: - ಪೂಸಾ ಆರಂಭಿಕ ಗೊಂಚಲು

ಮಣ್ಣು: ಸಾವಯವ ಅಂಶದಿಂದ ಸಮೃದ್ಧವಾಗಿರುವ ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಇದನ್ನು ಬೆಳೆಯಬಹುದು ಆದರೆ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಬರಿದಾದ ಲೋಮಿ ಅಥವಾ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಲೋಮ್ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಾಗ ಉತ್ತಮ ಫಲಿತಾಂಶವನ್ನು ನೀಡುತ್ತದೆ. ಇದು 5.3 ರಿಂದ 8.2 ರವರೆಗಿನ pH ಅನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಲ್ಲದು.

ಭೂಮಿ ಸಿದ್ಧತೆ: ಭೂಮಿಯನ್ನು ಎರಡು - ಮೂರು ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ ಮತ್ತು ಮಣ್ಣನ್ನು ಚೆನ್ನಾಗಿ ಓರೆಯಾಗಿಸಲು ತಂದುಕೊಳ್ಳಿ. ನಂತರ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸಮತಟ್ಟಾಗಿಸಲು ಮತ್ತು ಏಕರೂಪವಾಗಿಸಲು ಹಲಗೆ ಹಾಕುವ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಿ. ಕೊನೆಯ ಉಳುಮೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ 10-15 ಟನ್/ಎಕರೆ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣಿ ಸೇರಿಸಿ. ಬಿತ್ತನೆಗಾಗಿ 3x2 ಮೀ ಫ್ಲಾಟ್ ಹಾಸಿಗೆಗಳನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: ಜೂನ್-ಜುಲೈ ಮತ್ತು ಅಕ್ಟೋಬರ್ ಕೊನೆಯ ವಾರ ಮತ್ತು ನವೆಂಬರ್ ಮೊದಲ ವಾರ ಬಿತ್ತನೆಗೆ ಉತ್ತಮ ಸಮಯ.
ಅಂತರ: ರೇಖೆಯಿಂದ ರೇಖೆಗೆ 22.5 ಸೆಂ.ಮೀ ಅಂತರವನ್ನು ಬಳಸಲಾಗುತ್ತದೆ.
ಬಿತ್ತನೆ ಆಳ: ಹಾಸಿಗೆಯ ಮೇಲೆ 3-4 ಸೆಂ.ಮೀ ಆಳದಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಬೇಕು.
ಬಿತ್ತನೆ ವಿಧಾನ: ಬಿತ್ತನೆ ಪ್ರಸರಣ ವಿಧಾನವನ್ನು ಬಳಸಲಾಗುತ್ತದೆ.
ಬೀಜ ದರ: ಒಂದು ಎಕರೆ ಭೂಮಿಯಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲು, ಎಕರೆಗೆ 12 ಕೆಜಿ ಬೀಜ ದರವನ್ನು ಬಳಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೆಳೆ ತಿರುಗುವಿಕೆ: ಮೆಂತ್ಯವನ್ನು ಖಾರಿಫ್ ಬೆಳೆಗಳಾದ ಭತ್ತ, ಜೋಳ, ಹೆಸರುಕಾಳು, ಮೇವು ಬೆಳೆಗಳು ಇತ್ಯಾದಿಗಳೊಂದಿಗೆ ತಿರುಗಿಸಬಹುದು.

ಬೀಜ ಚಿಕಿತ್ಸೆ: ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು, ಬೀಜಗಳನ್ನು 8-12 ಗಂಟೆಗಳ ಕಾಲ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ನೆನೆಸಿ. ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಹರಡುವ ಕೀಟ ಮತ್ತು ರೋಗಗಳಿಂದ ಬೀಜಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು, ಅವುಗಳನ್ನು 4 ಗ್ರಾಂ / ಕೆಜಿ ಬೀಜಕ್ಕೆ ಥಿರಮ್ ಅಥವಾ 50% WP @ 3 ಗ್ರಾಂ / ಕೆಜಿ ಬೀಜಕ್ಕೆ ಕಾರ್ಬೆಂಡಜಿಮ್ ನೊಂದಿಗೆ ಸಂಸ್ಕರಿಸಬೇಕು. ರಾಸಾಯನಿಕ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯ ನಂತರ, 12 ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳಿಗೆ 20 ಗ್ರಾಂ / ಎಕರೆಗೆ ಅಜೋಸ್ಪಿರಿಲ್ಲಮ್ + 20 ಗ್ರಾಂ / ಟ್ರೈಕೊಡರ್ಮಾ ವಿರೈಡ್ ನೊಂದಿಗೆ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಸಂಸ್ಕರಿಸಬೇಕು.

ಗೊಬ್ಬರ: ಬಿತ್ತನೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಎಕರೆಗೆ 5 ಕೆಜಿ ಸಾರಜನಕ (12 ಕೆಜಿ ಯೂರಿಯಾ), 8 ಕೆಜಿ P_2O_5 (50 ಕೆಜಿ ಸೂಪರ್ಫಾಸ್ಫೇಟ್) ಸೇರಿಸಿ.

ಮೊಳಕೆಯೊಡೆದ 15-20 ದಿನಗಳ ನಂತರ ವೇಗವಾಗಿ ಬೆಳವಣಿಗೆಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು ಟ್ರಯಾಕಾಂಟನಾಲ್ ಹಾರ್ಮೋನ್ @ 20 ಮಿಲಿ / 10 ಲೀಟರ್ ಸಿಂಪಡಿಸಬೇಕು. ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 20 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ 75 ಗ್ರಾಂ / 15 ಲೀಟರ್ ನೀರಿನಲ್ಲಿ NPK (19:19:19) ಗೊಬ್ಬರದ ಒಂದು ಸಿಂಪಡಣೆ ಬೆಳೆ ಉತ್ತಮ ಮತ್ತು ವೇಗವಾಗಿ ಬೆಳೆಯಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು, ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 40-50 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಬ್ಯಾಸಿನೊಲೈಡ್ @ 50 ಮಿಲಿ / ಎಕರೆ / 150 ಲೀಟರ್ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಸಿಂಪಡಿಸಿ. 10 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಎರಡನೇ ಸಿಂಪಡಣೆ ಮಾಡಿ. ಹಿಮದ ಗಾಯದಿಂದ ಸಸ್ಯವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸಲು ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 45 ಮತ್ತು 65 ದಿನಗಳ ನಂತರ 150 ಗ್ರಾಂ / ಎಕರೆ / 150 ಲೀಟರ್ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಥಿಯೋರಿಯಾದ ಎರಡು ಸಿಂಪಡಣೆಗಳನ್ನು ನೀಡುತ್ತದೆ.

ಸಾರ ಸಂಖ್ಯೆ. ರೋಗ/ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣ
1 ಪೌಡರಿ ಶಿಲೀಂಧ್ರ ಬವಿಸ್ಟಿನ್ ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 01 ಗ್ರಾಂ
2 ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳು ಆಕ್ಟಾ ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 0.5 ಗ್ರಾಂ

ನೀರಾವರಿ: ಬೀಜದ ತ್ವರಿತ ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯುವಿಕೆಗಾಗಿ, ಬಿತ್ತನೆ ಪೂರ್ವ ನೀರಾವರಿ ನೀಡಿ. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 30 ನೇ ದಿನ, 75 ನೇ ದಿನ, 85 ನೇ ಮತ್ತು 105 ನೇ ದಿನ ಮೆಂತ್ಯ ಬೆಳೆಗೆ ಮೂರರಿಂದ ನಾಲ್ಕು ಬಾರಿ ನೀರುಹಾಕುವುದು ಅಗತ್ಯವಾಗಿರುತ್ತದೆ. ಬೀಜಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಬೀಜಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಹಂತದಲ್ಲಿ ನೀರಿನ ಒತ್ತಡವು ಇಳುವರಿಯಲ್ಲಿ ಭಾರೀ ನಷ್ಟಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುತ್ತದೆ, ಆದ್ದರಿಂದ ಈ ಹಂತದಲ್ಲಿ ನೀರಿನ ಒತ್ತಡವನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಕಳೆ ಮುಕ್ತವಾಗಿಡಲು ಒಂದು ಅಥವಾ ಎರಡು ಗುದ್ದಲಿ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಗಳನ್ನು ನೀಡಿ. ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 25-30 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಮೊದಲ ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವುದು ಮತ್ತು ಮೊದಲ ಕಳೆ ತೆಗೆದ ನಂತರ ಎರಡನೇ 30 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣವನ್ನು ಕೈಗೊಳ್ಳಿ. ರಾಸಾಯನಿಕವಾಗಿ ಕಳೆಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಲು, ಸಸ್ಯ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕಾಗಿ 800 ಮಿಲಿ / ಎಕರೆಗೆ ಫ್ಲುಕ್ಲೋರಾಲಿನ್ ಅನ್ನು ಶಿಫಾರಸು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ ಅಥವಾ ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕಾಗಿ 1-2 ದಿನಗಳ ಒಳಗೆ 200 ಲೀಟರ್ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ಪೆಂಡಿಮೆಥಲಿನ್ ಅನ್ನು ಸಿಂಪಡಿಸಿ, ಸರಿಯಾದ ಮಣ್ಣಿನ ತೇವಾಂಶದಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 1-2 ದಿನಗಳ ಒಳಗೆ ಸಿಂಪಡಿಸಿ.

ಸಸ್ಯವು ಸುಮಾರು 4 ಇಂಚು ಎತ್ತರವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಾಗ, ಪಿಂಚಿಂಗ್ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯನ್ನು ಮಾಡಿ, ಅದು ಕವಲೊಡೆಯುವುದನ್ನು ಉತ್ತೇಜಿಸುತ್ತದೆ.

ಕೊಯ್ಲು: ತರಕಾರಿ ಉದ್ದೇಶಕ್ಕಾಗಿ, ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 20-25 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಬೆಳೆ ಕೊಯ್ಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಬಹುದು, ಆದರೆ ಧಾನ್ಯದ ಉದ್ದೇಶಕ್ಕಾಗಿ, ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 90-100 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಧಾನ್ಯದ ಉದ್ದೇಶಕ್ಕಾಗಿ, ಕೆಳಗಿನ ಎಲೆಗಳು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿ ಉದುರಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದಾಗ ಮತ್ತು ಬೀಜಗಳು ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿದಾಗ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿ. ಕೊಯ್ಲು ಉದ್ದೇಶಕ್ಕಾಗಿ ಕುಡಗೋಲು ಬಳಸಿ. ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿದ ನಂತರ, ಬೆಳೆಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟುಗಳಲ್ಲಿ ಕಟ್ಟಿ 6-7 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಸೂರ್ಯನ ಬೆಳಕಿನಲ್ಲಿ ಒಣಗಲು ಬಿಡಿ. ಸರಿಯಾಗಿ ಒಣಗಿದ ನಂತರ, ಸ್ವಚ್ಛಗೊಳಿಸುವ ಮತ್ತು ಶ್ರೇಣೀಕರಣ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯ ನಂತರ ಒಕ್ಕಣೆ ಮಾಡಿ.

ಗಮನಿಸಿ:- ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುಗಳ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

মার্কফিল্ড হাইব্রিড ছিডছ্ প্রাইভেট লিমিটেড। লিমিটেড।
বি-৩, অতিৰিক্ত ঔদ্যোগিক কলনী, জালনা, গ্রাহক সেৱা মোবাইল নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

মেথি

হাইব্রিড/জাত: - Pusa Early Bunching

মাটিঃ ইয়াক জৈৱিক পদার্থৰে সমৃদ্ধ সকলো ধৰণৰ মাটিত খেতি কৰিব পাৰি যদিও ভালদৰে পানী ওলাই যোৱা লোম বা বালিচহীয়া লোম মাটিত খেতি কৰিলে সর্বোত্তম ফলাফল পোৱা যায়। ই ৫.৩ৰ পৰা ৮.২ৰ ভিতৰত পি এইচ সহ্য কৰিব পাৰে।

মাটিৰ প্রস্তুতিঃ দুই - তিনিবাৰ মাটি হাল বাই মাটি মিহি খেতি কৰিবলৈ আনিব লাগে। তাৰ পিছত মাটি সমতল আৰু একেধৰণৰ কৰিবলৈ প্লেংকিং অপাৰেচন চলাব লাগে। শেষবাৰৰ বাবে হাল বোৱাৰ সময়ত ১০-১৫টন/বিঘা ভালদৰে পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ দিব। বীজ সিঁচাৰ বাবে ৩x২ মিটাৰৰ প্রস্তুত কৰা সমতল বিচনা।

বীজ সিঁচাৰ সময়: জুন-জুলাই আৰু অক্টোবৰৰ শেষ সপ্তাহ আৰু নৱেম্বৰৰ প্রথম সপ্তাহটো বীজ সিঁচাৰ বাবে উত্তম সময়।
ব্যৱধান: ২২.৫ চে.মি.ৰ ৰেখাৰ পৰা ৰেখাৰ দূৰত্ব ব্যৱহাৰ কৰা হয়।
বীজ সিঁচাৰ গভীৰতাঃ ৩-৪ চে.মি. গভীৰতাত বিচনাত বীজ সিঁচিব লাগে।
বীজ সিঁচাৰ পদ্ধতি: বীজ সিঁচাৰ বাবে সম্প্রচাৰ পদ্ধতি ব্যৱহাৰ কৰা হয়।
বীজৰ হাৰঃ এক একৰ মাটিত বীজ সিঁচাৰ বাবে ১২ কিলোগ্রাম/বিঘা বীজৰ হাৰ ব্যৱহাৰ কৰা হয়।
শস্য আৱর্তনঃ মেথিক খাৰিফ শস্য যেনে ধান, কুঁহিয়াৰ, সেউজীয়া চোলা, পশুখাদ্য আদিৰ লগত ঘূৰণীয়া কৰিব পাৰি।

বীজ শোধন: বীজ সিঁচাৰ আগতে,বীজ ৮-১২ ঘন্টা পানীত তিয়াই থব লাগে। মাটিত জন্ম হোৱা কীট-পতংগ আৰু ৰোগৰ পৰা বীজ ৰক্ষা কৰিবলৈ থিৰাম@৪ গ্রাম/কিলোগ্রাম বীজ বা কার্বেণ্ডাজিম ৫০%WP@৩ গ্রাম/কিলোগ্রাম বীজৰ দ্বাৰা শোধন কৰিব লাগে। ৰাসায়নিক শোধনৰ পিছত ১২ কেজি বীজৰ বাবে Azospirillum@300 gm/acre + Trichoderma Viride@20 gm/acre ৰ দ্বাৰা বীজ শোধন কৰিব লাগে।

সাৰ: বীজ সিঁচাৰ সময়ত প্রতি একৰত ৫ কিলোগ্রাম নাইট্রজেন (১২ কিলোগ্রাম ইউৰিয়া), ৮ কিলোগ্রাম P2O5 (৫০ কিলোগ্রাম ছুপাৰফছফেট) যোগ কৰিব লাগে।
অংকুৰণৰ ১৫-২০ দিনৰ পিছত দ্রুত বৃদ্ধি লাভ কৰিবলৈ Triacontanol hormone@20ml/10 Ltr. লগতে বীজ সিঁচাৰ ২০ দিনত এন পি কে(১৯:১৯:১৯) সাৰ@৭৫ গ্রাম/১৫ লিটাৰ পানীৰ এটা স্প্রে'ই শস্যৰ ভাল আৰু দ্রুত বৃদ্ধিত সহায় কৰে। অধিক উৎপাদন পাবলৈ বীজ সিঁচাৰ ৪০-৫০ দিনৰ পিছত Brasinolide@50 ml/acre/150 Ltr পানী স্প্রে কৰিব লাগে। ১০ দিনৰ পিছত ইয়াৰ দ্বিতীয়টো স্প্রে' লওক। হিমৰ আঘাতৰ পৰা উদ্ভিদক ৰক্ষা কৰিবলৈ বীজ সিঁচাৰ ৪৫ আৰু ৬৫ দিনৰ পিছত থাইউৰিয়া @১৫০ গ্রাম/একাৰ/১৫০ লিটাৰ পানী দুটা স্প্রে দিব লাগে

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

জলসিঞ্চন: বীজ সোনকালে অংকুৰণৰ বাবে বীজ সিঁচাৰ আগতে জলসিঞ্চন দিব লাগে। সাধাৰণতে মেথি শস্যৰ অনুকূল উৎপাদনৰ বাবে বীজ সিঁচাৰ ৩০ তাৰিখ, ৭৫ দিন, ৮৫ আৰু ১০৫ দিনত তিনিৰ পৰা চাৰিটা জলসিঞ্চনৰ প্রয়োজন হয়। গুটিৰ বিকাশ আৰু বীজৰ বিকাশৰ পর্যায়ত পানীৰ চাপৰ ফলত উৎপাদনৰ যথেষ্ট ক্ষতি হয় গতিকে এই পর্যায়ত পানীৰ চাপৰ পৰা হাত সাৰিব লাগে।

অপতৃণ নিয়ন্ত্রণ: পথাৰত অপতৃণমুক্ত কৰি ৰাখিবলৈ এটা বা দুটা কোদাল অপাৰেচন দিব লাগে। প্রথম অপতৃণ বীজ সিঁচাৰ ২৫-৩০ দিনৰ পিছত আৰু দ্বিতীয় ৩০ দিনৰ পিছত প্রথম অপতৃণ লোৱা। অপতৃণ ৰাসায়নিকভাৱে নিয়ন্ত্রণ কৰিবলৈ গছৰ পূর্বে Fluchloralin@800 ml/acre বা অপতৃণ নিয়ন্ত্রণৰ বাবে Pendimethaline@1.3 litr/acre ৰ দ্বাৰা স্প্রে কৰাটো বাঞ্ছনীয়, মাটিৰ সঠিক আর্দ্রতাত বীজ সিঁচাৰ ১-২ দিনৰ ভিতৰত ২০০ লিটাৰ পানীত মিহলাই।
যেতিয়া উদ্ভিদ প্রায় ৪ ইঞ্চি উচ্চতা হয়, পিঞ্চিং অপাৰেচন কৰক, ই শাখা-প্রশাখাক উৎসাহিত কৰিব।

চপোৱা: শাক-পাচলিৰ বাবে বীজ সিঁচাৰ ২০-২৫দিনৰ পৰা শস্য চপোৱা আৰম্ভ কৰিব পাৰি আনহাতে শস্যৰ উদ্দেশ্যে বীজ সিঁচাৰ ৯০-১০০দিনৰ পিছত চপোৱা হয়। শস্যৰ উদ্দেশ্যে তলৰ পাতবোৰ হালধীয়া হৈ ছিটিকিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে আৰু গুটিবোৰ হালধীয়া ৰঙৰ হ'লে চপাব লাগে। চপোৱাৰ উদ্দেশ্যে কাঁচি ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে। চপোৱাৰ পিছত শস্যবোৰ বাণ্ডিলত বান্ধি ৬-৭দিন ৰ'দৰ পোহৰত শুকুৱাবলৈ দিব লাগে। সঠিকভাৱে শুকুৱাই লোৱাৰ পিছত তাৰ পিছত চাফাই আৰু গ্রেডিং কার্য্যৰ পিছত থ্রেছিং কৰক।

বি:দ্র:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্রত কৰা পৰীক্ষাৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি দিয়া হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন জলবায়ু, মাটিৰ প্রকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে ওপৰৰ তথ্যসমূহ ভিন্ন হ'ব পাৰে।

মার্কফিল্ড হাইব্রিড সিডস প্রাইভেট লিমিটেড
বি-৩, অতিরিক্ত শিল্প কলোনি, জালনা, কাস্টমার কেয়ার মোবাইল নং ৯৪০৫৭৮২৬৬৮

মেথি

হাইব্রিড/জাত: - পুসা আর্লি বাঞ্চিং

মাটি: জৈব উপাদান সমৃদ্ধ সকল ধরণের মাটিতে এটি চাষ করা যেতে পারে তবে সুনিষ্কাশিত দোআঁশ বা বেলে দোআঁশ মাটিতে চাষ করলে সবচেয়ে ভালো ফলাফল পাওয়া যায়। এটি ৫.৩ থেকে ৮.২ এর pH সহ্য করতে পারে।

জমি প্রস্তুতি: জমি দুই-তিনবার চাষ করুন এবং মাটিকে সূক্ষ্মভাবে চাষ করুন। এরপর জমিকে সমান এবং সমান করার জন্য প্লাঙ্কিং অপারেশন করুন। শেষ চাষের সময় ১০-১৫ টন/একর ভালোভাবে পচানো গোবর যোগ করুন। বপনের জন্য ৩x২ মিটার সমতল বেড প্রস্তুত করুন।

বপনের সময়: জুন-জুলাই এবং অক্টোবরের শেষ সপ্তাহ এবং নভেম্বরের প্রথম সপ্তাহ বপনের জন্য সবচেয়ে ভালো সময়।
ব্যবধান: লাইন থেকে লাইন দূরত্ব ২২.৫ সেমি ব্যবহার করা হয়।
বপনের গভীরতা: ৩-৪ সেমি গভীরে বেডে বীজ বপন করুন।
বপনের পদ্ধতি: বপনের জন্য ছিটিয়ে দেওয়ার পদ্ধতি ব্যবহার করা হয়।
বীজহার: এক একর জমিতে বীজ বপনের জন্য ১২ কেজি/একর বীজ ব্যবহার করা হয়।
শস্যচক্র: ধান, ভুট্টা, ছোলা, পশুখাদ্য ইত্যাদি খরিফ ফসলের সাথে মেথির আবর্তন করা যেতে পারে।

বীজ শোধন: বপনের আগে, বীজ ৮-১২ ঘন্টা পানিতে ভিজিয়ে রাখুন। মাটি থেকে উৎপন্ন পোকামাকড় এবং রোগ থেকে বীজ রক্ষা করার জন্য, থিরাম @ ৪ গ্রাম/কেজি বীজ অথবা কার্বেনডাজিম ৫০% ডব্লিউপি @ ৩ গ্রাম/কেজি বীজ দিয়ে শোধন করুন। রাসায়নিক শোধনের পর, অ্যাজোস্পিরিলাম @ ৩০০ গ্রাম/একর + ট্রাইকোডার্মা ভিরাইড @ ২০ গ্রাম/একর ১২ কেজি বীজ দিয়ে শোধন করুন।

সার: বপনের সময়, প্রতি একরে ৫ কেজি নাইট্রোজেন (১২ কেজি ইউরিয়া), ৮ কেজি P2O5 (৫০ কেজি সুপারফসফেট) যোগ করুন।
অঙ্কুরোদগমের ১৫-২০ দিন পর দ্রুত বৃদ্ধি পেতে ট্রায়াকন্টানল হরমোন @ ২০ মিলি/১০ লিটার স্প্রে করুন। এছাড়াও বপনের ২০ দিন পর NPK (১৯:১৯:১৯) সার @ ৭৫ গ্রাম/১৫ লিটার পানিতে একবার স্প্রে করলে ফসলের ভালো এবং দ্রুত বৃদ্ধি হয়। অধিক ফলন পেতে, বপনের ৪০-৫০ দিন পর ব্রাসিনোলাইড @ ৫০ মিলি/একর/১৫০ লিটার পানিতে স্প্রে করুন। ১০ দিন পর দ্বিতীয় স্প্রে করুন। তুষারপাতের আঘাত থেকে গাছকে রক্ষা করার জন্য বীজ বপনের ৪৫ এবং ৬৫ দিন পর থিওরিয়া @ ১৫০ গ্রাম/একর/১৫০ লিটার পানিতে দুটি স্প্রে করুন।

ক্রমিক নং	রোগ/পোকামাকড় নিয়ন্ত্রণ	প্রতি লিটার পানিতে পরিমাণ
১	পাউডারি মিলডিউ	ব্যাভিস্টিন ০১ গ্রাম
২	টি শোষক পোকা	অ্যাকট্রা ০.৫ গ্রাম

সেচ: বীজের দ্রুত অঙ্কুরোদগমের জন্য, বপনের আগে সেচ দিন। মেথি ফসলের সর্বোত্তম ফলনের জন্য সাধারণত বপনের ৩০তম, ৭৫তম, ৮৫তম এবং ১০৫তম দিনে তিন থেকে চারটি সেচ প্রয়োজন। শুঁটি বিকাশ এবং বীজ বিকাশের পর্যায়ে জলের চাপের ফলে ফলনের ব্যাপক ক্ষতি হয়, তাই এই পর্যায়ে জলের চাপ এড়িয়ে চলুন।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ: জমি আগাছামুক্ত রাখতে এক বা দুটি নিড়ানি প্রয়োগ করুন। বপনের ২৫-৩০ দিন পরে প্রথম আগাছা এবং প্রথম আগাছা নিড়ানির ৩০ দিন পরে দ্বিতীয় আগাছা নিড়ান। রাসায়নিকভাবে আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্য, উদ্ভিদের পূর্বে ফ্লুক্লোরালিন @ ৮০০ মিলি/একর প্রয়োগ বা আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্য পেন্ডিমেথালিন @ ১.৩ লিটার/একর স্প্রে করার পরামর্শ দেওয়া হয়, বপনের ১-২ দিনের মধ্যে মাটির সঠিক আর্দ্রতা থাকা অবস্থায় ২০০ লিটার জলে মিশিয়ে স্প্রে করুন।

গাছটি প্রায় ৪ ইঞ্চি উচ্চতার হলে, চিমটিকরণের মাধ্যমে শাখা-প্রশাখা তৈরিতে উৎসাহিত করুন।

ফসল সংগ্রহ: সবজির জন্য, বীজ বপনের ২০-২৫ দিন পর ফসল সংগ্রহ শুরু করা যেতে পারে, যেখানে শস্য সংগ্রহের জন্য, বীজ বপনের ৯০-১০০ দিন পর ফসল সংগ্রহ করা হয়। শস্য সংগ্রহের জন্য, যখন নীচের পাতা হলুদ হয়ে ঝরে পড়তে শুরু করে এবং শুঁটি হলুদ বর্ণ ধারণ করে, তখন ফসল সংগ্রহ করুন। ফসল সংগ্রহের জন্য কাস্তে ব্যবহার করুন। ফসল সংগ্রহের পর, ফসলগুলিকে আঁটিবদ্ধ করে বেঁধে ৬-৭ দিন রোদে শুকাতে দিন। সঠিকভাবে শুকানোর পর, মাড়াইয়ের কাজ করুন, তারপর পরিষ্কার এবং গ্রেডিং করুন।

বিঃদ্রঃ:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে জলবায়ু, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্যগুলি ভিন্ন হতে পারে।

seedto
Quality Seeds

ਮਾਰਕਫੀਲਡ ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਸੀਡਜ਼ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਲਿਮਟਿਡ
ਬੀ-3, ਐਡੀਸ਼ਨਲ ਇੰਡਸਟਰੀਅਲ ਕਲੋਨੀ, ਜਾਲਨਾ, ਕਸਟਮਰ ਕੇਅਰ ਮੋਬਾਈਲ ਨੰਬਰ 9405782668

ਮੇਥੀ
ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ/ਕਿਸਮਾਂ: - ਪੂਸਾ ਅਰਲੀ ਬੰਚਿੰਗ

ਮਿੱਟੀ: ਇਸਨੂੰ ਜੈਵਿਕ ਤੱਤਾਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਹਰ ਕਿਸਮ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਉਗਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਿਕਾਸ ਵਾਲੀ ਦੋਮਟ ਜਾਂ ਰੇਤਲੀ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਉਗਾਉਣ 'ਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਨਤੀਜਾ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਇਹ 5.3 ਤੋਂ 8.2 ਦੀ ਰੇਂਜ ਦੇ pH ਨੂੰ ਸਹਿਣ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ: ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ ਦੋ-ਤਿੰਨ ਵਾਰ ਵਾਹੋ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਬਰੀਕ ਭੁਰਭੁਰਾ ਬਣਾਓ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ ਪੱਧਰਾ ਅਤੇ ਇਕਸਾਰ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਪਲੈਂਕਿੰਗ ਕਾਰਵਾਈ ਕਰੋ। ਆਖਰੀ ਵਾਹੀ ਦੇ ਸਮੇਂ 10-15 ਟਨ/ਏਕੜ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੜਿਆ ਹੋਇਆ ਗੋਬਰ ਪਾਓ। ਬਿਜਾਈ ਲਈ 3x2 ਮੀਟਰ ਦੇ ਤਿਆਰ ਫਲੈਟ ਬੈੱਡ ਤਿਆਰ ਕਰੋ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ: ਜੂਨ-ਜੁਲਾਈ ਅਤੇ ਅਕਤੂਬਰ ਦਾ ਆਖਰੀ ਹਫ਼ਤਾ ਅਤੇ ਨਵੰਬਰ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਹਫ਼ਤਾ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਸਮਾਂ ਹੈ।

ਵਿੱਥ: ਲਾਈਨ ਤੋਂ ਲਾਈਨ ਦੀ ਦੂਰੀ 22.5 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਵਰਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦੀ ਡੂੰਘਾਈ: ਬੈੱਡ 'ਤੇ 3-4 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਡੂੰਘਾਈ 'ਤੇ ਬੀਜ ਬੀਜੋ।
ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਤਰੀਕਾ: ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਛਿੱਟੇ ਮਾਰਨ ਦਾ ਤਰੀਕਾ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ: ਇੱਕ ਏਕੜ ਜ਼ਮੀਨ ਵਿੱਚ ਬਿਜਾਈ ਲਈ, 12 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਵਰਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਫਸਲੀ ਚੱਕਰ: ਮੇਥੀ ਨੂੰ ਸਾਉਣੀ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਝੋਨਾ, ਮੱਕੀ, ਛੋਲੇ, ਚਾਰੇ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਆਦਿ ਨਾਲ ਚੱਕਰ ਲਗਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਬੀਜ ਦਾ ਇਲਾਜ: ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ 8-12 ਘੰਟਿਆਂ ਲਈ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਭਿਓ ਦਿਓ। ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਅਤੇ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਤੋਂ ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ ਲਈ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਥੀਰਮ @ 4 ਗ੍ਰਾਮ/ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਜਾਂ ਕਾਰਬੈਂਡਾਜ਼ਿਮ 50% WP @ 3 ਗ੍ਰਾਮ/ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਨਾਲ ਇਲਾਜ ਕਰੋ। ਰਸਾਇਣਕ ਇਲਾਜ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, 12 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜਾਂ ਲਈ ਐਜ਼ੋਸਪੀਰੀਲਮ @ 300 ਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ + ਟ੍ਰਾਈਕੋਡਰਮਾ ਵਾਇਰਡ @ 20 ਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ ਨਾਲ ਬੀਜਾਂ ਦਾ ਇਲਾਜ ਕਰੋ।

ਖਾਦ: ਬਿਜਾਈ ਦੇ ਸਮੇਂ, ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ 5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ (12 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਯੂਰੀਆ), 8 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ P2O5 (50 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਸੁਪਰਫਾਸਫੇਟ) ਪਾਓ। ਪੁੰਗਰਨ ਤੋਂ 15-20 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਵਿਕਾਸ ਕਰਨ ਲਈ ਟ੍ਰਾਈਕੌਂਟਾਨੋਲ ਹਾਰਮੋਨ @ 20 ਮਿ.ਲੀ./10 ਲੀਟਰ ਦੀ ਸਪਰੇਅ ਕਰੋ। ਨਾਲ ਹੀ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 20 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ NPK (19:19:19) ਖਾਦ @ 75 ਗ੍ਰਾਮ/15 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੀ ਇੱਕ ਸਪਰੇਅ ਫਸਲ ਦੇ ਚੰਗੇ ਅਤੇ ਤੇਜ਼ ਵਾਧੇ ਵਿੱਚ ਮਦਦ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਵਧੇਰੇ ਝਾੜ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਬ੍ਰਾਸਿਨੋਲਾਈਡ @ 50 ਮਿ.ਲੀ./ਏਕੜ/150 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ, ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 40-50 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਸਪਰੇਅ ਕਰੋ। ਇਸਦੀ ਦੂਜੀ ਸਪਰੇਅ 10 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਕਰੋ। ਪੌਦੇ ਨੂੰ ਠੰਡ ਦੀ ਸੱਟ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਥਿਓਰੀਆ ਦੇ ਦੋ ਸਪਰੇਅ @ 150 ਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ/150 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 45 ਅਤੇ 65 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਦਿੱਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਸੀ.ਆਰ. ਨੰ. ਬਿਮਾਰੀ/ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਮਾਤਰਾ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ
1 ਪਾਊਡਰਰੀ ਫ਼ਫ਼ੂੰਦੀ ਬਾਵਿਸਟਨ 01 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ
2 ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜੇ ਐਕਟਰਾ 0.5 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ

ਸਿੰਜਾਈ: ਬੀਜ ਦੇ ਜਲਦੀ ਪੁੰਗਰਨ ਲਈ, ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਿੰਚਾਈ ਦਿਓ। ਮੇਥੀ ਦੀ ਫ਼ਸਲ ਦੇ ਵਧੀਆ ਝਾੜ ਲਈ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 30ਵੇਂ ਦਿਨ, 75ਵੇਂ ਦਿਨ, 85ਵੇਂ ਅਤੇ 105ਵੇਂ ਦਿਨ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਤਿੰਨ ਤੋਂ ਚਾਰ ਸਿੰਚਾਈਆਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਫਲੀਆਂ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਅਤੇ ਬੀਜ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਪੜਾਅ 'ਤੇ ਪਾਣੀ ਦੀ ਕਮੀ ਕਾਰਨ ਝਾੜ ਵਿੱਚ ਭਾਰੀ ਨੁਕਸਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਪੜਾਅ 'ਤੇ ਪਾਣੀ ਦੀ ਕਮੀ ਤੋਂ ਬਚੋ।

ਨਦੀਨ ਨਿਯੰਤਰਣ: ਖੇਤ ਨੂੰ ਨਦੀਨ ਮੁਕਤ ਰੱਖਣ ਲਈ ਇੱਕ ਜਾਂ ਦੋ ਗੋਡੀਆਂ ਕਰੋ। ਪਹਿਲੀ ਗੋਡੀ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 25-30 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਅਤੇ ਦੂਜੀ ਗੋਡੀ ਪਹਿਲੀ ਗੋਡੀ ਤੋਂ 30 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਕਰੋ। ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਰਸਾਇਣਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨ ਲਈ, ਪੌਦੇ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਫਲੂਚੋਰਾਲਿਨ @ 800 ਮਿ.ਲੀ./ਏਕੜ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਦੀ ਸਿਫਾਰਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਜਾਂ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ ਲਈ ਪੈਂਡੀਮੇਥਾਲੀਨ @ 1.3 ਲੀਟਰ/ਏਕੜ ਨਾਲ ਸਪਰੇਅ ਕਰੋ, ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 1-2 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ-ਅੰਦਰ 200 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਮਿਲਾ ਕੇ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਸਹੀ ਨਮੀ 'ਤੇ ਸਪਰੇਅ ਕਰੋ।

ਜਦੋਂ ਪੌਦਾ ਲਗਭਗ 4 ਇੰਚ ਉੱਚਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਪਿੰਚਿੰਗ ਓਪਰੇਸ਼ਨ ਕਰੋ, ਇਹ ਟਾਹਣੀਆਂ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਕਰੇਗਾ।

ਵਾਢੀ: ਸਬਜ਼ੀਆਂ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਲਈ, ਫ਼ਸਲ ਦੀ ਕਟਾਈ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 20-25 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਕਿ ਅਨਾਜ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਲਈ, ਫ਼ਸਲ ਦੀ ਕਟਾਈ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 90-100 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਅਨਾਜ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਲਈ, ਜਦੋਂ ਹੇਠਲੇ ਪੱਤੇ ਪੀਲੇ ਹੋ ਜਾਣ ਅਤੇ ਝੜਨ ਲੱਗ ਪੈਣ ਅਤੇ ਫਲੀਆਂ ਪੀਲੇ ਰੰਗ ਦੀਆਂ ਹੋ ਜਾਣ ਤਾਂ ਵਾਢੀ ਕਰੋ। ਵਾਢੀ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਲਈ ਦਾਤਰੀ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ। ਵਾਢੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਫ਼ਸਲਾਂ ਨੂੰ ਗੱਠਿਆਂ ਵਿੱਚ ਬੰਨ੍ਹੋ ਅਤੇ 6-7 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਧੁੱਪ ਵਿੱਚ ਸੁਕਾਉਣ ਦਿਓ। ਸਹੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਸੁਕਾਉਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਥਰੈਸ਼ਿੰਗ ਕਰੋ ਅਤੇ ਫਿਰ ਸਫਾਈ ਅਤੇ ਗਰੇਡਿੰਗ ਕਾਰਜ ਕਰੋ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਜਲਵਾਯੂ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।